

प्रो. सदानंद भोसले द्वारा अनूदित 'घुमकड़ी' में मधुमेह का चित्रण

डॉ. सोनकांबले अरुण अशोक

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग

किसन वीर महाविद्यालय, वाई

पिन कोड – 412803

मो.नं. 9503007853

ई-मेल – arunsonkamble765@gmail.com

शोध सारांश

घुमकड़ी में मानव शरीर से संबंधित मधुमेह बीमारी का सांगोपांग विवेचन किया है। वर्तमान युग में दुनिया में इस बीमारी के बारे में अनेक गलतफहमियाँ हैं। लोग इन मरीजों को डराने वाली सलाह देते हैं और इस कारण से वह ज्यादा परेशान होते हैं। लेकिन प्रसिद्ध लेखक उत्तम कांबले ने घुमकड़ी इस स्तंभालेख में मधुमेह को एक नई जीवनशैली को अपनाकर इस बीमारी पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। शरीर और मन को प्रसन्न, ताजा और सेहतभरा रखना चाहते हैं तो व्यायाम जरूरी है। नियमित व्यायाम से मधुमेह बीमारी को हम जड़ से खत्म कर सकते हैं। प्रस्तुत शोध-प्रपत्र श्रेष्ठ अनुवादक प्रो. सदानंद भोसले द्वारा अनूदित घुमकड़ी पर आधारित है।

कूटशब्द- मधुमेह, मरीज, व्याधि, बीमारी, देहमंदिर, लावारिस, शुगर, डायबिटीज, ग्लूकोमीटर, किडनी, कविता और डिप्रेशन।

प्रस्तावना

मराठी साहित्य के सुप्रसिद्ध लेखक एवं पत्रकार सकाळ समाचारपत्र के संपादक उत्तम कांबले द्वारा लिखित 'फिरस्ती' का श्रेष्ठ अनुवादक प्रो. सदानंद भोसले द्वारा हिंदी में घुमकड़ी नाम से अनुवाद हुआ है। अनुवाद यह पुनःकथन होता है। अनुवाद में सबसे कठिन अनुवाद साहित्यानुवाद है। उत्तम कांबले ने घुमकड़ी में लोगों की उन समस्याओं को सामने रखा है जिसमें उपाय भी सुझाएँ हैं। 'सकाळ' समाचार पत्र में हर रविवार सप्तमं में एक आलेख प्रकाशित होता था। लोगों की मांग भी बड़े पैमाने पर थी कि इस आलेख को बंद न करें। यह बंद न करने के पीछे एक कारण था कि यह उन लोगों के बारे में लेखन कर रहे थे जिनको अब तक केवल सुना था पर घुमकड़ी के माध्यम से वह लिखित रूप में सामने आ रहा था। घुमकड़ी में मनुष्य की सेहत का भी काफी ध्यान रखा गया है। यह 49 लेखों का संग्रह 'फिरस्ती' शीर्षक से 25 जुलाई 2012 को मनोविकास प्रकाशन, पुणे द्वारा प्रकाशित हुआ। अनुवादक प्रो. सदानंद भोसले ने बहुत गहराई से प्रस्तुत कृति का मराठी से हिंदी में 'घुमकड़ी' नाम से अनुवाद किया है। इसे आर. के. पब्लिकेशन मुंबई द्वारा प्रकाशित किया है। 'सर सलामत तो पगड़ी पचास' इस कहावत को लेकर उत्तम कांबले ने घुमकड़ी में प्रत्यक्ष रूप में दिखाया है। 'देहमंदिर के लिए कसरत और लावारिस चाय' इस आलेख में वर्तमान युग में सबसे जटिल बीमारी जो अनेक घरों में अत्यंत नजदीकता से दिखाई दे रही है, उसका नाम है- डायबिटीज या मधुमेह। लोकमानस में डायबिटीज मधुमेह को लेकर काफी नफरत और अनजानी है। किसी भी बीमारी को हम जड़ से खत्म कर सकते हैं, उसके लिए हमारी जीवनशैली में बदलाव लाकर। किसी भी बीमारी को खत्म करने के लिए अपने पास आत्मविश्वास होना चाहिए। आत्मविश्वास के बिना हम हमारे शरीर को चुस्त-तंदुरुस्त नहीं बना सकते। सभी बीमारियों की जड़ हमारी मानसिकता है।

घुमकड़ी को पढ़ने के बाद समझ में आता है कि मधुमेह के मरीज घबराएँ नहीं बल्कि उसे सही तरीके से स्वीकार कर उसका स्वागत हर्ष के साथ करना चाहिए। यह भाव उत्तम कांबले के 'देहमंदीर के लिए कसरत और लावारिस चाय' पाठ के माध्यम से अध्यनोपरांत दृष्टिगोचर होता है। मधुमेह यह बीमारी स्वयं लेखक को भी है और स्वयं अपने सत्रह-अठारह साल के पुत्र चार्वाक को भी यानी घर से ही इस बीमारी का अनुभव लेखक को होता है। प्रस्तुत पाठ में मधुमेह के सकारात्मक पक्ष के साथ नई जीवनशैली के बारे में जानकारी प्रदान की गई है।

मधुमेह को लेकर आम लोगों में एक गलतफहमी है कि इससे मनुष्य की कभी भी मृत्यु हो सकती है। लेकिन ऐसा नहीं है। मधुमेह वाले मरीजों को उल्लू किस तरह से बनाया जाता है इसका अंकन घुमकड़ी में किया है। इस बीमारी से छुटकारा पाने के अनेक उपाय बगैर पूछे लोग बताते हैं। इसका वर्णन करते हुए लेखक ने लिखा है- "चप्पल बदलते रहो, मोझे भी बदलते रहो, चश्मे भी बदलते रहो... दिमाग को ठंडा करके देखो... आहार को मापने के लिए टोला-मासा से ग्राम तक परिमाण का प्रयोग करो... तैरने के लिए जाइए... दौड़ने जाइए... जब में शुगर रखो... कडवी बात मत करो... जिह्वा पर चीनी रखो... नियमित रूप से चीनी की जांच करो, हो सके तो ग्लूकोमीटर साथ में रखो, आँखों और किडनी की हिफाजत करो... पाँव के तलवे का ज्यादा ध्यान रखो... नटी का चेहरा जितना महत्वपूर्ण होता है, उतना ही हमारे पाँव का तलवा... तंग कपड़े मत पहनो... भारी चप्पल मत पहनो... डायबिटीज एक व्याधि नहीं है, वह तो व्याधियों की गैंग लेकर घूमता है आदि-आदि..."¹ उपर्युक्त उद्धरण से ज्ञात होता है कि जिनको मधुमेह की बीमारी होती है तो मरीज के आस-पड़ोस के लोग विभिन्न प्रकार की सलाह देते हैं। क्या पहनना चाहिए क्या नहीं, तैरने की, दौड़ने की, जब में शुगर रखने की, कडवी बात न करने की, आँख और किडनी की हिफाजत करने की, साथ ही तंग कपड़े न पहनने की सलाह दी जाती है। मधुमेह केवल एक व्याधि ही नहीं वह उसकी गैंग लेकर घूमता है से मतलब ऐसा मरीज अनेक बीमारियों को हमेशा साथ में लेकर घूमता है। आमतौर पर देखा जाता है कि मधुमेह के मरीज को इस बीमारी से ज्यादा उन सलाह देने वाले लोगों से खतरा होता है। जिनके द्वारा हमेशा मरीज को डराया जाता है। इससे मरीज हमेशा डर के माहौल में जीते रहते हैं। कोरोना जैसी महामारी में भी इन मरीजों को काफी डराया गया कि मधुमेह के मरीज और अन्य रोगियों के साथ सौतेला व्यवहार करते हुए नजर आए। इन लोगों की मानसिकता किस तरह से होती है, इस लोकभावना को अपने स्तंभालेख के माध्यम से लोगों तक पहुँचाया है। इस डर को लेखक ने आम जनता के मन से निकालने का प्रयास किया है।

लेखक एक कार्यक्रम में मराठी भाषा के प्रसिद्ध कवि वसंत बापट के साथ खाना खा रहे थे उस समय लेखक ने अपना स्वयं का खाना गिनकर ही लिया उस समय वसंत बापट गुलाब जामुन खाने लगे और लेखक का खाना देखकर कहने लगे- "अरे डरो मत, कविता करने में और डायबिटीज में मैं तुम्हारा वरिष्ठ हूँ। देख मैं किस तरह से प्रहार कर रहा हूँ..."² प्रस्तुत उद्धरण से ज्ञात होता है कि मधुमेह कोई बड़ी बीमारी नहीं है। किसी भी बीमारी से डरना नहीं बल्कि उसके खिलाफ लड़ना है। लेखक उत्तम कांबले को कवि वसंत बापट के द्वारा यह बड़ी सलाह है, इस सलाह से मीठा खाने वाले सभी डायबिटीज वालों को राहत मिलती है क्योंकि अक्सर मधुमेह के मरीज के आस-पड़ोस के घर वाले, मित्र आदि के द्वारा मीठा खाने के लिए मना करते हैं। स्वयं डायबिटीज के मरीज का मीठा खाने का मन होता है लेकिन सेहत और बिगड़ न जाए इसलिए वे नहीं खा पाते, इसी तरह की अवस्था लेखक उत्तम कांबले की हुई है। लेखक का इस संदर्भ में मार्मिक रेखांकन दिखाई देता है। किसी भी बीमारी को मन पर नहीं लेना है। यह चीज खानी चाहिए, यह चीज नहीं खानी चाहिए, आदि विचार इनके मन में आते हैं। लेकिन कवि वसंत बापट स्वयं मधुमेह के मरीज होकर भी इन बातों को नजरअंदाज करते हैं। ऐसे अनेक लोग जो इस बीमारी से ग्रस्त होते हैं लेकिन उचित व्यायाम और योग करके इस बीमारी पर बिना दवाई विजय प्राप्त कर चुके हैं और उत्तम कांबले के द्वारा लिखे हुए इस

स्तंभालेख के माध्यम से महाराष्ट्र के 'सकाळ' समाचारपत्र पढ़ने वाले अनेक पाठक इसका अनुकरण करते हुए प्रत्यक्ष रूप में अमल में लाने की कोशिश करते हैं।

लेखक उत्तम कांबले लावारिस चाय की कहानी को बताते हैं। भाषा में शब्द कितने महत्वपूर्ण होते हैं इसका वर्णन लेखक जब महाराष्ट्र के बीड से अंबाजोगाई जा रहे थे उस समय एक ढाबे पर चाय पीने के लिए रुक गए तब वेटर के साथ लेखक का संवाद काफी विशिष्टता के साथ उभरकर आया है, जो द्रष्टव्य है— “बगैर शक्कर की एक कप चाय दो। उसे मराठी समझ में नहीं आती होगी ऐसा मानकर फिर से कहा “विदऊट शुगर चाय ला...” फिर भी वह देखता ही रहा। मैं फिर से मराठी, हिंदी और अंग्रेजी में समझाने की कोशिश करने लगा। आखिर वह समझ गया, इसकी खुशी जाहिर करते हुए उसने कहा, “साहब लावारिस चाय बोलो ना...” मैंने तो अपना माथा ठोंक लिया।”³ इससे ज्ञात होता है कि लेखक उत्तम कांबले ने भाषिक ताकत को समझते हुए अपना माथा ठोंक देते हैं इसका मतलब वे इतना परेशान होते हैं कि उनको लावारिस शब्द पर हँसे या रोएँ यह समझ में नहीं आ रहा था। वेटर ने डायबिटीज वाले के लिए लावारिस शब्द क्यों ढूँढा होगा इस विचार में लेखक डूब गए। ‘चार कोस पर पानी बदले आठ कोस पर बानी’ इस कहावत के अनुसार भाषा किस तरह से बदलती है, किस तरह से परिवर्तित होती है इसका प्रत्यक्ष अनुभव इस शब्द से होता है। भाषा ध्वनि प्रतीकों की यादृच्छिक व्यवस्था होती है, इसका अनुप्रयोग प्रस्तुत उद्धरण में हुआ। जो बिना शक्कर की चाय के लिए गढ़ा गया शब्द है। अनुवाद यह पुनःसर्जन होता है, जो प्रस्तुत पाठ का प्रो. सदानंद भोसले ने किया है। अनुवादक के द्वारा भाषा की प्रकृति को ज्यों कि त्यों अपनी भाषिक संस्कृति का समग्र ध्यान रखते हुए शब्द की ताकत को बरकरार रखा गया है। मराठी के प्रसिद्ध लेखक उत्तम कांबले के भाषिक अनुप्रयोग समानांतर भाषिक अंतरण बड़ी विशिष्टता के साथ हुआ है।

शुगर कम ज्यादा होने से कई लोग हैं जिन्हें अचानक चक्कर आने के कारण मंच पर भाषण देते-देते गिरकर मृत्यु हुई थी। ऐसे अनेक प्रकार दिनोंदिन बढ़ रहे हैं। जिससे अनेक लोग तनाव में चले जाते हैं और कई लोग डायबिटीज को हराने में लगे हुए, जिसका वर्णन करते हुए लेखक उत्तम कांबले के मत को अनुवाद कर प्रो.सदानंद भोसले लिखते हैं— “ऐसी कई घटनाएँ देखने और सुनने के बाद कुछ लोग डिप्रेशन में जाते हैं। डायबिटीज का इलाज होने के बावजूद भी डिप्रेशन में जाते हैं। एक ऐसे आदमी को देखा है, जो म्हसरुल से गोदा घाट तक का पाँच-छह किलोमीटर का फासला सुबह-शाम दो बार चलकर तय करते हैं... सब्जी खरीदने खुद ही जाते हैं ...कोई दौड़ने का प्रयोग करते हैं...”⁴ प्रस्तुत उद्धरण से ज्ञात होता है कि वर्तमान युग विज्ञान और तकनीकी का है। हर समस्या पर हल है उसी तरह से हर बीमारी का भी इलाज आज हमारे पास है अगर उस इलाज को जानेंगे और समझेंगे तो इसे हराने के लिए हम तैयार होंगे। डायबिटीज को काबू में करने के लिए व्यायाम अत्यंत जरूरी है। सुबह-शाम पैदल चलने के कारण हमारा तनाव कम होता है और शुगर लेवल नियंत्रण में होती है। जिसका लेखक उत्तम कांबले ने एक आदमी का उदहारण दिया है जो म्हसरुल से गोदा घाट तक लगभग चार-पाँच किलोमीटर का अंतर पार करके सब्जी लाने पैदल चलता है, जो इससे उसकी शुगर लेवल काफी कम होती है, केवल व्यायाम से हम हर बीमारी को दूर रख सकते हैं, जो वर्तमान मानव जीवन के लिए काफी जरूरी है।

धुमकड़ी में डायबिटीज का वर्णन यह स्वानुभूतिमय अभिव्यक्ति है। क्योंकि लेखक उत्तम कांबले इससे स्वयं गुजर रहे थे। साथ ही उनके बेटे चार्वक को भी सोलह-सत्रह साल की उम्र में डायबिटीज हुई थी लेकिन उचित उपाय और जीवनशैली को नियमित रूप से अपनाकर चार्वक ने इस पर विजय प्राप्त की। उनकी व्यायाम के बल पर दवाइयाँ भी बंद हुईं। नई जीवनशैली को जीकर नया जीवन प्राप्त किया था। शरीर के लिए व्यायाम एवं प्रार्थना करना काफी जरूरी है, जो बेटे चार्वक के द्वारा किया गया है। व्यायाम शरीर के लिए स्वास्थ्यवर्धक होता है। समग्र मधुमेह मरीजों के सामने चार्वक एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत है।

कम उम्र में चार्वाक जैसे अनेक युवा हैं, जिन्हें इस बीमारी ने परेशान किया है। लेकिन हम चार्वाक जैसे मेहनत करेंगे तो निश्चित रूप से हम उस पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। आमतौर पर लगभग सभी बीमारियों का हल डॉक्टर के पास होता है लेकिन कुछ ऐसी बीमारियाँ हैं कि वह डॉक्टर के साथ—साथ हम स्वयं भी उस पर उपाय खोज सकते हैं और आसानी के साथ बीमारी पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। कभी—कभी ऐसा भी होता है कि डॉक्टर का इलाज खत्म होने के बाद कई मरीजों को भगवान भरोसे घर ले जाने के लिए कहा जाता है। जब उस मरीज को घर ले आते हैं तब वह मरीज अपनी सकारात्मक मन की इच्छाशक्ति के आधार पर अनेक साल अपना जीवन जी चुके हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जाता है कि भारतीय परंपरा की दो महत्वपूर्ण भाषाएँ मराठी और हिंदी हैं। घुमकड़ी में प्रस्तुत पाठ को स्रोतभाषा मराठी से लक्ष्यभाषा हिंदी में ले जाने का महत्तम कार्य अनुवादक प्रो. सदानंद भोसले द्वारा किया गया है। अनुवाद यह अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान की एक शाखा के अंतर्गत अध्ययनरत है। अनुवाद करते समय दो सामाजिक और सांस्कृतिक भाषाव्यवहार की दृष्टि से श्रेष्ठ अनुवादक प्रो. सदानंद भोसले की ओर से सूक्ष्म ध्यान दिया गया है। मराठी में लेखक उत्तम कांबळे की एक विशिष्ट शैली है, जो आम जनता को सीधा समझ में आ जाती है। इसका कारण एक तो लेखक स्वयं पत्रकार है। यह घुमकड़ी लेखक ने लिखी जो आम ग्रामीण पाठक से लेकर विद्वानों तक समाचार पत्र को पढ़ते हैं, इसे अनुवादक ने बड़ी सूक्ष्मता के साथ हिंदी पाठकों तक पहुँचाया है। उत्तम कांबळे की सुबोध, सरल और प्रवाहमय भाषा को कलात्मकता के साथ हिंदी में लाने का भरसक प्रयास किया गया है। प्रस्तुत पाठ से समग्र पाठकों और मधुमेह से परेशान लोगों को एक सलाह मिलती है कि इससे घबराना नहीं। नई जीवनशैली और नई दैनंदिनी अपनाकर इस बीमारी से छुटकारा पाकर अपना स्वस्थ, सुलभ और सेहतमंद जीवन जी सकते हैं।

संदर्भ :

1. घुमकड़ी—उत्तम कांबळे, अनुवाद— प्रो.सदानंद भोसले आर.के. पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण -2019, पृष्ठ संख्या-50
2. घुमकड़ी—उत्तम कांबळे, अनुवाद— प्रो.सदानंद भोसले आर.के. पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण -2019, पृ.सं.-51
3. घुमकड़ी—उत्तम कांबळे, अनुवाद— प्रो.सदानंद भोसले आर.के. पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण -2019, पृष्ठ संख्या-51
4. घुमकड़ी—उत्तम कांबळे, अनुवाद— प्रो.सदानंद भोसले आर.के. पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण -2019, पृ.सं.-51 और 52